अमृत प्रार्थना
भगवान से

परम पूज्य गुरुदेव द्वारा कराई प्रार्थना करेंगे
हे प्रभु! हे अंतर्यामी! हे जगत्पते! आप सर्वव्यापी हैं!
दूर होते हुए भी आप सबके हृदय में निवास करते हैं। अर्थात मेरे हृदय में भी वास करते हैं। लेकिन फिर भी मैं मूर्ख हूँ। अपने हृदय में वास करने वाले भगवान को नहीं पहचाना !जानने का प्रयत्न भी नहीं किया! लेकिन किसी व्यक्ति को पता चल जाए किउसके घर में खजाना गढ़ा हुआ है तो दिन रात उस खजाने को प्राप्त करने के लिए दौड़ता रहता है, खुदाई करता रहता है। उस समय उसे, ना भूख लगती है,ना प्यास, ना नींद आती है और ना ही थकान होती है। उसे तो बस उस खजाने को प्राप्त करने की पड़ी रहती है।
वैसे ही है प्रभु !यह जानकर भी कि आप मेरे हृदय में वास करते हैं लेकिन फिर भी मैं निश्चिंत होकर सो रहा हूँ। अत: मेरे इस अपराध को क्षमा करें। हे अंतर्यामी !हे हृदय में वास करने वाले परमेश्वर! मैं भी आपको प्राप्त करना चाहता हूँ। लेकिन मुझे मार्ग नहीं सूझ रहा। आप कृपा करें!मैं किस प्रकार से आपका दर्शन करूं?!
ॐ शांति शांति शांति!